IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, October 2023

रीवा जिले में कृषि भूमि के स्थानिक, सामयिक परिवर्तन एवं समन्वित विकास का भौगोलिक अध्ययन

प्रकाश कुमार पाण्डेय* डॉ. ए. के. सिंह**
*शोधार्थी भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
**प्राध्यापक भूगोल, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांशः कृषि भूमि उपयोग का संबंध ऐसी भूमि से है जिस पर वर्तमान समय में कृषि की जा रही हो, इसके अंतर्गत कृषि भूमि उपयोग के तीन महत्वपूर्ण पक्षों, बोया गया क्षेत्रफल, द्विशस्यीय भूमि उपयोग का सबसे महवपूर्ण पक्ष है, इसके उपयोग की विभिन्न अवस्थाएं मानव की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के स्तर की द्योतक है। सामान्यतः मानव कृषि कार्य से संबंधित विभिन्न सुविधाओं का विकास कर कृषित भूमि के विस्तार के लिए सदैव जागरूक रहता है। धरातलीय दृष्टि से इस क्षेत्र में अनेक असमानताएं दृष्टिगोचर होती है। रीवा जिले के उत्तर भाग में समतल मैदान है जो नदियों द्वारा लायी गयी मिट्टी से बना है। जबकि दक्षिणी भाग पर्वतीय है जो कैमूर श्रेणियों का क्षेत्र है और मध्यवर्ती भू–भाग पठारी तथा कटा–फटा है। दक्षिणी पर्वती भाग एवं मध्य वनों का पठारी भाग में चूनायुक्त कठोर प्राचीन शैल मिलती है। अतः धरातलीय दृष्टि से यह भाग पर्वतीय श्रेणियों, पठारों एवं मैदानी सभी का मिश्रित रूप है।

मुख्य शब्द–कृषि, भूमि, स्थानिक, सामयिक, समन्वित विकास, उत्पादकता एवंआर्थिक विकास।

प्रस्तावनाः

आधुनिक समय में रीवा जिले की कृषि का धीरे–धीरे वैज्ञानीकरण हो रहा है, परन्तु अभी भी जिले के बहुधा कृषक कृषि के इन नवीन तकनीकों व कृषि कार्य के नूतन ज्ञान का लाभ उठाने में अनेक प्रकार की भ्रान्तियों से ग्रसित होने के कारण अभी भी पीछे है, लेकिन शासन स्तर पर किये जा रहे प्रयासों से जिले के कृषकों में भी धीरे–धीरे परिवर्तन दिखने लगे हैं अर्थात् वे कृषि के पारम्परिक आयामों को धीरे–धीरे प्रयास कर वर्तमान में हो रहे परिवर्तनों की ओर बढ़ रहे हैं। अध्ययन क्षेत्र की प्रमुख उपज खाद्यान्न फसलें है जो कृषि भू–भाग के 75 से 80 प्रतिशत हिस्से पर उगाये जाते हैं। वस्तुतः जिले की अर्थव्यवस्था का मूलाधार कृषिहै, जिसमें जिले की आज भी लगभग 68–70 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में लगी हुयी है। जिले की अधिकांश भूमि पठारी क्षेत्रों, हल्की अनुर्वरक मिट्टी एवं उन्नत कृषि के लिए आवश्यक आधारभूत संसाधनों की कमी के कारण आज भी यहां की कृषि का पूर्णतः विकास नहीं हो पा रहा है जिससे जिले की अर्थव्यवस्था अभी भी पिछड़ी हुयी है। यहां के अधिकांश कृषक छोटे–छोटे काश्तकारों के रूप में कृषि कार्य में संलग्न है, बहुत से ऐसे कृषक हैं जिनकी औसत जोत का आकार एक एकड़ से भी कम है। इसलिए जिले के कृषकों एवं खेतिहर मजदूरों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु मिश्रित खेती, डेयरी फार्मिंग, कृषि वानिकी, बागवानी कृषि, पुशपालन, कृषि यंत्र, उद्योग, लकड़ी उद्योग, चावल मिल, दाल मिल, आटा मिल एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य कृषि भूमि उपोग में स्थानिक तथा सामयिक परिवर्तन कर कृषि उत्पादन में वृद्धि, व्यावसायिक एवं बागाती कृषि को बढ़ावा देने के साथ–साथ उपलब्ध स्थानीय सामग्री पर आधारित लघु व कुटीर उद्योगों को विकसित कर ग्रामीण जीवन को आत्मनिर्भर बनाना है। ताकि जिले की तहसीलों के ग्रामीण अंचलों की तस्वीर आधुनिकता के अनुसार परिवर्तित हो सके। यदि ऐसा सम्भव हो सका तो जिले की तहसीलों के प्रत्येक ग्राम की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर बन सकेगी और उसका प्रभाव जिले पर भी पड़ेगा तथा जिले का आर्थिक विकास सुनिश्चित होगा। इस दृष्टिकोण से जिले की कृषि उत्पादकता का आकलन करने और स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन के कारण चयनित ग्रामीण अंचलों का सूक्ष्म स्तर पर विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए मौलिक समंकों का संकलन प्राथमिक तौर पर सर्वेक्षण के दौरान कृषकों से लिये गये है। जिन्हें परिमार्जित करने के पश्चात् वर्गीकृत कर तालिकाबद्ध किया गया है ताकि समाज के प्रत्येक वर्ग/व्यक्ति को सजतापूर्वक समझ में आ सके।

उद्देश्य :–

सामाजिक अनुसंधान किसी विशेष उद्देश्य से प्रेरित होकर किया जाता है, ताकि अनुसंधान के पश्चात् वास्तविक तथ्यों को उद्घाटित किया जा सके। इसी से प्रेरित होकर शोधकर्ता ने रीवा जिले में कृषि भूमि के स्थानिक, सामयिक परिवर्तन एवं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, October 2023

समन्वित विकास का भौगोलिक अध्ययन विषय पर अपना शोध आलेख प्रस्तुत किया है। शोधकर्ता द्वारा चयन किये गये शोध आलेख के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–

- कृषि भूमि के स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन होने से जिले के विकास की गतिविधियों का मूल्यांकन करना।
- वर्तमान समय में कृषि भूमि के स्थानिक तथा सामयिक परिवर्तन से रीवा जिले के समन्वित विकास को ज्ञात करना।

परिकल्पना :–

प्रस्तुत शोध आलेख से संबंधित परिकल्पनाएं निम्नानुसार हैं–

- जिले की कृषि भूमि उपयोग में स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन कर उत्पादन में वृद्धि होने से गहरा संबंध है।
- जिले की कृषि भूमि उपयोग के स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन से जिले का समन्वित विकास होने में संबंध है।
- उपरोक्त परिकल्पनाओं को केन्द्र में रखकर जिले के कृषि भूमि उपयोग के सामयिक एवं स्थानिक परिवर्तनों का मूल्यांकन प्राथमिक समंकों के आधार पर विश्लेषित कर प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या :–0020

प्रस्तुत शोध आलेख के निष्पक्षता के साथ पूर्ण करने के लिए रीवा जिले में कृषि भूमि के स्थानिक, सामयिक परिवर्तन एवं समन्वित विकास का भौगोलिक अध्ययन करने के लिए प्राथमिक समंकों को संग्रहित कर वर्गीकरण के साथ सरण एवं बोधगम्य बनाकर तालिकाओं में प्रस्तुत कर अध्ययन किया गया है, जो इस प्रकार है–

◆ **कृषि भूमि के स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन होने से जिले का विकास** –जिले की तहसीलों में कृषि भूमि में स्थानिक एवं सामयिक परिवर्तन के फलस्वरूप जिले का समन्वित विकास होने से संबंधित मौलिक तथ्यों को सर्वेक्षण के समय साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर एकत्रित कर तालिका क्रमांक–01 में प्रस्तुत कर विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है–

तालिका क्रमांक–01 कृषि भूमि में स्थनिक व सामयिक बदलाव से जिले का समन्वित विकास

क्रमांक	विवरण	कृषकों के अभिमतों का संग्रहण	
		कृषकों की संख्या	प्रतिशत
1.	हाँ	316	90.29
2.	नहीं	34	9.71
कुल		350	100.00

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित।

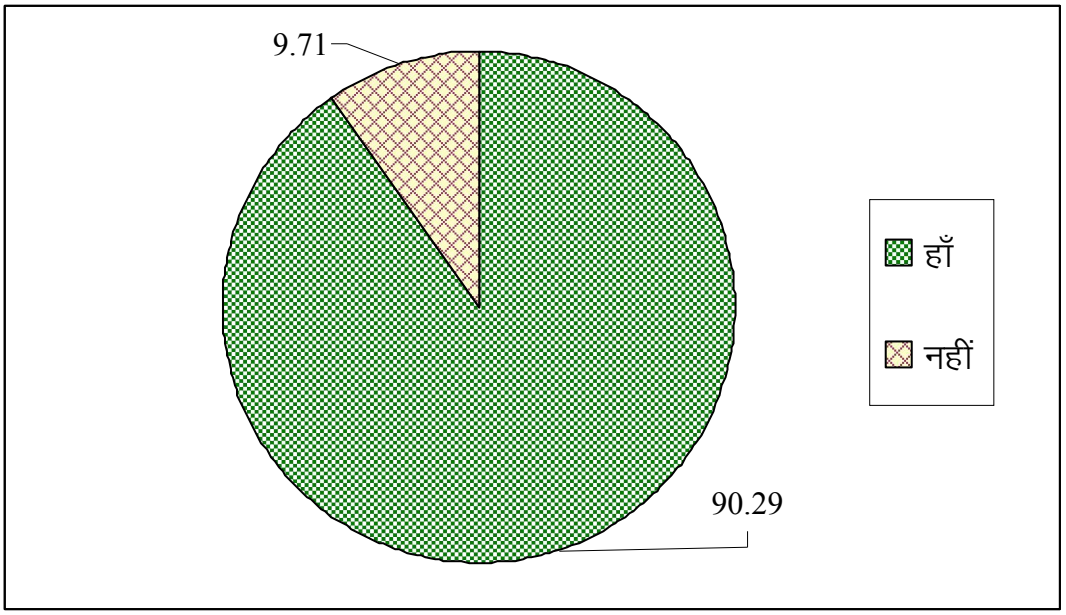

आरेख क्र.–01 : कृषि भूमि में स्थनिक व सामयिक बदलाव से जिले का समन्वित विकास।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, October 2023

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 01 को देखने से सुस्पष्ट होता है कि कृषि भूमि में स्थानिक व सामयिक बदलाव से जिले का समन्वित विकास से संबंधित है। शोधकर्ता द्वारा चयन किये गये कुल 350 कृषकों में 316 कृषकों ने बतलाया कि कृषि भूमि में स्थानिक एवं सामयिक बदलाव से जिले का समन्वित विकास हो रहा है, जिनका प्रतिशत 90.29 है तथा 34 कृषकों ने बतलाया कि कृषि भूमि में स्थानिक व सामयिक बदलाव से जिले का समन्वित विकास नहीं हो रहा है, जिनका प्रतिशत 9.71 है। अतः इससे सुस्पष्ट होता है कि रीवा जिले से चयनित सबसे अधिक कृषकों ने अपना अभिमत दिया कि कृषि भूमि में स्थानिक व सामयिक बदलाव से जिले का समन्व्ति विकास हो रहा है।

◆**जिले का समन्वित विकास होने का विवरण** –जिले के कृषकों द्वारा कृषि भूमि उपयोग के स्थानिक तथा सामयिक परिवर्तनों से सम्पूर्ण जिले का समन्वित विकास होने से संबंधित स्तरों का आकलन करने के लिए प्राथमिक स्तर पर मौलिक समंकों को सर्वेक्षण का कार्य करते समय साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से संकलित कर तालिका क्रमांक–02 में प्रस्तुत कर विश्लेषण किया गया है–

तालिका क्रमांक–02 जिले का समन्वित विकास होने का विवरण

क्रमांक	विवरण	कृषकों के अभिमतों का संग्रहण	
		कृषकों की संख्या	प्रतिशत
1.	बहुत अच्छा	260	74.29
2.	सामान्य अच्छा	47	13.43
3.	अच्छा	32	9.14
4.	कह नहीं सकते	11	3.14
कुल		350	100.00

स्रोत– प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित।

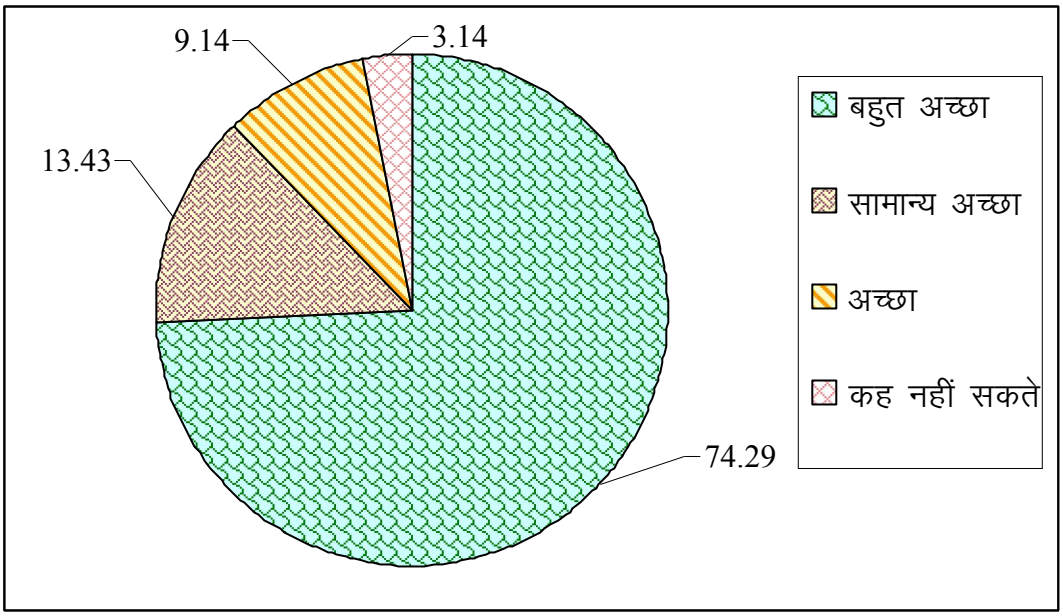

आरेख क्र.–02 : जिले का समन्वित विकास होने का विवरण

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 02 को देखने से प्रतीत होता है कि यह जिले का समन्वित विकास होने के विवरण से संबंधित है, शोधकर्ता द्वारा चयनित सम्पूर्ण 350 कृषकों में 260 कृषकों ने बताया कि जिले का समन्वित विकास बहुत अच्छा है, जिनका प्रतिशत 74.29 है, 47 कृषकों ने बतलाया कि जिले का समन्वित विकास सामान्य अच्छा है, जिनका प्रतिशत 13.43 है, 32 कृषकों ने बतलाया है कि जिले का समन्वित विकास अच्छा है जिनका प्रतिशत 9.14 है तथा 11 कृषकों ने अपना अभिमत दिया कि जिले का समन्वि विकास के बारे में कह नहीं सकते जिनका प्रतिशत 3.14 है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जिले के सर्वाधिक चयनित कृषकों ने स्वीकारा है कि जिले का समन्वित विकास बहुतअच्छा है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, October 2023

निष्कर्ष :–

रीवा जिले में कृषि भूमि के स्थानिक, सामयिक परिवर्तन एवं समन्वित विकास का भौगोलिक अध्ययन प्राथमिक समंकों के विश्लेषण के आधार पर करने से स्पष्ट होता है कि जिले में कृषि भूमि के स्थानिक, सामयिक एवं समन्वित विकास में वर्तमान समय में काफी बदलाव आया है जिसके कारण जिले के कृषि उत्पादों की उत्पादकता में काफी वृद्धि हो रही है जिसका परिणाम जिले की अर्थव्यवस्था के विकासात्मक पहलुओं पर गहरा पड़ रहा है।

संदर्भ ग्रंथः

[1]. जैन, पी.सी.– भारत में कृषि विकास, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, वर्ष 2008
[2]. मध्यप्रदेश का आर्थिक सर्वेक्षण – आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, म.प्र., वर्ष 2018–19
[3]. मुकर्जी, रवीन्द्रनाथ, सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली, वर्ष 1989
[4]. अग्रवाल, एन.एल. – भारतीय कृषि अर्थतंत्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, वर्ष 1998
[5]. कृषि साहित्य – मध्यप्रदेश किसान एवं कृषि विकास विभाग, संयुक्त संचलक कृषि, जिला–रीवा (म.प्र.), वर्ष 2008
[6]. जैन, एस.सी. – ग्रामीण एवं कृषि विपणन, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, वर्ष 2018, पृष्ठ 38
[7]. कुमार, प्रमिला – मध्यप्रदेश एक भौगोलिक अध्ययन, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमिक, भोपाल (म.प्र.), वर्ष 2006